JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"मुरादाबाद जनपद में हिन्दी माध्यम व अग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन"

नीरू चौधरी
शोधार्थिनी

डॉ0 प्रदीप कुमार तिवारी
सहायक प्रोफेसर

सारांश

एक शिक्षक विद्यार्थी की आवश्यकता, क्षमता रूचि, योग्यता, विशेषताः आदि को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करता है। उन विद्यार्थियों में कुछ विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं जिनकी रूचि सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न होती है। यह बालक चिन्ता ग्रस्त भी हो सकते हैं। कक्षा के विद्यार्थियों की रूचि अतिकाशतः अलग–अलग होती है। यह भी कहा जाता है कि बालकों में व्यक्तिगत भिन्नता के कारण रूचि में भी भिन्नता पायी जाती है। अगर किसी विद्यार्थी को उसकी रूचि के विपरीत विषयों का चयन गलत कर दिया गया तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ उसके व्यक्तित्व के भी प्रभावित होने की सम्भावना हो जाती है। प्रस्तुत शोध के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये–मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तर के सरकारी विद्यलायों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति वर्ग एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया

ज्ञमल ूवतके– 1. माध्यमिक विद्यालय, 2. विद्यार्थी, 3. व्यवसायिक रूचि

अध्यापक की सफलता अपने विद्यार्थियों में व्यवसायिक रूचि उत्पन्न करने तथा उसे स्थिर रखनें में निहित है। इसलिए वह विद्यार्थियों में व्यवसायिक रूचि उत्पन्न करने का भरसक प्रयास करता है। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से सम्बन्धित सभी तत्वों–शिक्षार्थी, शिक्षण–सामग्री, शिक्षण–वातावरण, शिक्षण–विधियां, अध्यापक आदि का आयोजन और नियंत्रण। इस प्रकार किया जाना चाहिए जिससे सीखने की क्रिया के प्रति व्यवसायिक रूचि उत्पन्न करने में सबको महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हो। अतः रूचि उत्पन्न करने के लिए सभी दिशाओं में प्रयास करने की आवश्यकता होती है। शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जो मानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढ़ंग से अदा करने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही बालक धर्म, सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उसमें राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक तत्व एवं अनिवार्य घटक के साथ सोचने समझने की क्षमता का विकास होता है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब बालक शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो। सामान्य तौर पर व्यवसायिक रूचि का सम्बन्ध विद्यार्थी द्वारा लिये गये विषयों से लगाया जाता है परन्तु व्यवसायिक रूचि के अन्तर्गत विद्यार्थी का सम्बन्ध उस क्षेत्र से होता है जिस क्षेत्र में वह विद्यालय से निकलकर महाविद्यालय में प्रवेश करना चाहता है अधिकांश देखा जाता है कि माता–पिता अपने बच्चों को डाक्टर, इंजीनियर या अधिकारी ही बनाना चाहते है परन्तु वास्तव में वह अपने बच्चे की रूचि का ध्यान नहीं रखते है वो अपनी रूचि अपने बच्चों को थोपते है परिणामस्वरूप हमारे सामने कई केस ऐसे आते है कि कर्मचारी अपने मन से काम नहीं कर रहा है क्योंकि उसको उसकी रूचि के अनुसार काम ही नहीं दिया गया है। अगर किसी विद्यार्थी को उसकी रुचि के अनुसार विषय नहीं मिलते है तो

उसकी व्यवसायिक रुचि प्रभावित हो जाती है। रुचि प्रभावित होने से विद्यार्थियों की सर्वांगीण विकास भी प्रभावित हो जाता है।

आवश्यकता एवं महत्व –

विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों में कुछ विषय विद्यार्थियों के अधिक रूचि रहने के कारण उनके मानसिक स्तर से ऊपर के स्तर के सिद्ध हो जाते हैं। इन विषयों को समझने के लिए विद्यार्थिया को अतिरिक्त व्यवसायिक रूचि प्रयास कराना परिवार व विद्यालय का कार्य है। जिनमें मुख्यतः माता पिता का ध्यान न देना, परिवार का उत्तरदायित्व एवं भविष्य की चिन्ता जो इनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है इनकी व्यवसायिक रूचि का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्त्व आदि पर सीधा पड़ता है। एक विद्यार्थी की शैक्षिक निष्पत्ति के लिए विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होने के साथ–साथ उसकी रूचि से सम्बन्धित विषय को भी जाता है अगर विद्यार्थी को इच्छानुसार व्यवसायिक रूचि के क्षेत्र के विषय नहीं मिले तो उसकी शैक्षिक निष्पत्ति तो प्रभावित होगी ही साथ ही साथ वह जो भी अध्ययन करेंगा उसमें भी उसका मन नहीं लगेगा न ही भविष्य में वह अच्छा व्यापार कर सकता है। इन विद्यार्थियों के व्यवसायिक रूचि पर ध्यान नहीं दिया गया तो इनका सर्वांगींण विकास भी प्रभावित हो जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से प्राप्त निष्कषों के द्वारा इन विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि को उभारने का प्रयास किया जायेगा।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन–

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण में शिक्षा में निम्नलिखित शोधार्थियों ने अपने अध्ययन में रुचि से सम्बन्धित विद्यार्थियों पर प्रकाश डाला है। जिसमें सी0आर0 परमेरा (1973), एस0 गरवार (1974), सिंह आर0 (1978)ए आशा0 टी0 (1980), सक्सेना आर0 (1983), अमीना एम0 (1991), जी0 देवराज (1992), कुमार एस0 (2017), मीणा डी0के0 (2010) एवं कुमार आर0 (2019) प्रमुख हैं।

समस्या कथन–

''मुरादाबाद जनपद में हिन्दी माध्यम व अग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन''

शोध विधि–वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण–वर्तमान शोध हेतु डॉ0 एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श– वर्तमान शोध हेतु कक्षा 11 वीं व 12 वीं में अध्ययन करने वाले लगभग 40 विद्यार्थियों को शामिल कर उनको लिंग, क्षेत्र, वर्ग एवं जाति में वर्गीकृत किया किया गया है।

शोध के उद्देश्य –

1. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की व्यवसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन।
3. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन।
4. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों अनुसूचित जाति वर्ग एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की मुख्य परिकल्पनाएं –

1. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

3. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति वर्ग एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–1

मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक रूचि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	20	24.32	7.32	38	4.941
छात्रायें	20	24.82	6.98		

व्याख्या –

तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 24.32 एवं 7.32 प्राप्त हुआ है। जबकि छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 24.82 एवं 6.98 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 4.911 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से कम है। अतः छात्रों एवं छात्राओं की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 1 अस्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–2

मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थी एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
ग्रामीण विद्यार्थी	20	26.18	8.10	38	5.16
शहरी विद्यार्थी	20	30.32	10.42		

व्याख्या–

तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 26.18 एवं 8.10 प्राप्त हुआ है। जबकि शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 30.62 एवं 10.42 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 5.16 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से कम है। कम मान सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अतः ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 2 अस्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–3

मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	20	28.12	7.30	38	3.026
निजी विद्यालयों के विद्यार्थी	20	29.08	10.11		

व्याख्या –

तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 28.12 एवं 7.30 प्राप्त हुआ है। जबकि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 29.08 एवं 10. 11 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 3.026 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से अधिक है। अधिक मान सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। अतः सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 3 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–4

मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थी	20	29.12	8.30	38	4.38
अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी	20	30.08	9.11		

व्याख्या–

तालिका से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 29.12 एवं 8.30 प्राप्त हुआ है। जबकि अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 30.08 एवं 9.11 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का क्रान्तिक अनुपात का मान 4.38 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर से कम है। कम मान सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अतः अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या 4 स्वीकार की जाती है।

शोध के निष्कर्ष –

1. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।
2. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।
3. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तर के सरकारी विद्यलायों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
4. मुरादाबाद जनपद में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति वर्ग एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः हमारी परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

संदर्भ सूची

रायजादा बी0एस0 (1997) : शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व राज, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

सुखिया एस0पी0 (1998) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

कुमार डा० नरेश (1985) : राष्ट्रीय शिक्षा– विक्रम प्रकाशन, नई दिल्ली।

गुप्ता प्रो0 एस0पी0 (2002) : अनुसंधान संदिर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

पाण्डे डॉ0 के0 पी0 (2006) : शैक्षिक अनुसंधान विश्व विद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

मंगल एस०के० (2004) : शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

राय पारस नाथ (1999) : अनुसंधान विधियाँ, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।